प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

बच्चों के अनुकूल खादी के परिधानों का किया निर्माण

पंतनगर। १८ अप्रैल २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग में बच्चों के लिए खादी के परिधान तैयार करने हेतु विभिन्न डिजाइनों पर शोध किया गया। कुछ दशक पहले तक खादी केवल बुजुर्गों के द्वारा पहना जाता था, लेकिन वर्तमान में खादी फैशन का पर्याय है तथा युवा वर्ग से बुजुर्गों तक सभी खादी से बने विभिन्न परिधानों का प्रयोग कर रहे हैं, किन्तु बच्चों के लिए खादी के वस्त्रों के प्रयोग की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया है।

बच्चों की त्वचा बहुत संवेदनशील होती है, ऐसे में इसे विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। इसलिए बच्चों के लिए प्राकृतिक रेशों से बने हुए कपड़ों को विकसित करने की जरूरत महसूस हुई, जो वातावरण के अनुकूल हों। ऐसे में खादी के कपड़े को उपयुक्त माना गया। भारत में खादी का कपड़ा, कपास, रेशम, ऊन या फिर इन धागों के मिश्रण से हाथ से काता व बुना जाता है। खादी गर्मियों में ठण्डा और सर्दियों में गर्म रहता है, जो बच्चों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और आराम की दृष्टि से सर्वोत्तम है। बच्चों के लिए खादी की उपयोगिता के बावजूद उनके लिए बाजार में खादी के परिधानों की अनुपलब्धता को देखते हुए वस्त्र एवं परिधान विभाग की विभागाध्यक्ष, डा. अल्का गोयल, के नेतृत्व में शोध छात्रा योगिता भट्ट ने शालापूर्व, यानि पाठशाला जाने से पहले, बच्चों के लिए वस्त्रों की डिजाइनिंग एवं निर्माण हेतु खादी के उपयोग के विषय पर शोध किया। उन्होंने शालापूर्व बालक और बालिकाओं की आवश्यकता, सुविधा, सुरक्षा व आराम को ध्यान में रखकर उनके लिए खादी के ८ प्रकार के वस्त्रों का निर्माण निश्चित किया, जिसमें चार प्रकार के वस्त्र बालक और चार प्रकार के वस्त्र बालिकाओं के लिए थे। इनमें से प्रत्येक के १०, यानि कुल ८० डिजाइनों का चयन किया गया, जिसमें से जजों द्वारा चुने गये ४० डिजाइनों को कम्प्यूटर की सहायता से संशोधित किया गया। इन डिजाइनों का शालापूर्व बच्चों की माताओं के साथ परीक्षण किया गया, जिसमें उन्हें अंक प्रदान किये गये तथा अधिक औसत अंक प्राप्त वस्त्रों को परिधान निर्माण के लिए चुना गया। खादी से बने बच्चों के कपड़े जितने धोए जाते है, उतने ही ये बेहतर होते जाते हैं। यह कपड़ा मजबूत होता है और कई वर्षों तक खराब नहीं होता। डा. गोयल ने बताया कि खादी से बने इन कपड़ों का निर्माण भारत सरकार की मेक इन इण्डिया की धारणा को भी साकार करता है, साथ ही स्वदेशी उत्पाद होने के कारण इनसे देश की आर्थिक स्थिति भी मजबूत होगी एवं ग्रामीण स्तर पर युवाओं को रोजगार मिलेगा। डा. गोयल ने बताया कि खादी से निर्मित कपड़े, विभिन्न ब्राण्ड के कपड़ों की तुलना में काफी सस्ते होने के साथ-साथ वातावरण हितैषी (इको फ्रेण्डली) भी होते हैं, जिससे छोटे बच्चों को इन्हें पहनने में काफी आराम मिलता है। यह शोध वस्त्र निर्माण और परिधान उद्योग के लिए अत्यंत सहायक होगा तथा भविष्य में खादी से बच्चों के लिए निर्माण किये गये कपड़े बाजार में तथा क्षेत्रीय गांधी आश्रम की दुकानों पर उपलब्ध होंगे।